सद्‌गुरु यीशु की रंगबिरंगी कहानियाँ

सद्‌गुरु यीशु की रंगबिरंगी कहानियाँ

लेखिका

श्रीमती गरिमा तिवारी

चित्रांकन

अन्तर्राष्ट्रीय रचना विद्यार्थी

1 ईश्वर ने एक सुन्दर संसार को बनाया।

शुरुआत में इस संसार में कुछ नहीं था, कुछ भी नहीं था। ना कुछ सुन सकते थे, ना कुछ दिखाई देता और ना कुछ महसूस कर सकते। कुछ नहीं और कुछ भी नहीं।

लेकिन ईश्वर वहाँ था और उसके पास एक बड़ी सुन्दर योजना थी। उसने इस संसार को सुंदरता से भरने की योजना बनाई। उसने सब कुछ बनाया - सब कुछ। ईश्वर बस कहता था और सभी चीजें हो जाती थीं।

उसने दिन में प्रकाश के लिए सूरज बनाया और रात में चमकने के लिए चाँद और तारों को भी। उसने समुद्र और आसमान बनाया फिर उसमें से जमीन बनाई जो कई तरह के थे बालू वाले, लाल मिट्टी के और पहाड़ वगैरह।

फिर उसने आसमान में उड़ने के लिए पक्षी, समुद्र के लिए मछली, मगरमच्छ और भी बहुत कुछ! और जमीन पर रहने के लिए तरह-तरह के जानवर भी बनाये।

सबकुछ बनाने के बाद ईश्वर ने उसे देखा और हर एक चीज को देखकर खुश हुआ उसे सब अति सुन्दर लगा।

लेकिन ये संसार अब भी अधूरा था लोगों के बिना, जो उसका आंनद उठा सके। तब ईश्वर ने एक आदमी को बनाया और उसकी सहायता के लिए औरत को भी बनाया।

ईश्वर ने अपने नए संसार को उन्हें दिया ताकि वे उसका आनन्द लें, मजे करें और उसकी देखभाल करें। उसने उनके लिए एक जगह तैयार किया जहाँ वे रह सके।

और उन दोनों ने जब अपनी आँखें खोलीं तो ईश्वर को ही देखा वे ईश्वर से बड़ा प्रेम करते क्योंकि ईश्वर ने उनसे पहले प्रेम किया।

वहाँ पर सिर्फ खुशियाँ थीं, प्रेम था, कोई दुःख-दर्द, बीमारी नहीं थी।

ईश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया
और सब कुछ जो उसमें है।

2 एक झूठ जिसने सब कुछ पलट दिया

आदमी और औरत बड़े मजे के साथ अपने खूबसूरत से बगीचे में रहते थे, और सब कुछ बहुत अच्छा था लेकिन कुछ ही समय के लिए जिस दिन सब कुछ उल्टा-पुल्टा हो गया।

ईश्वर का एक शत्रु था जो बड़ा खतरनाक था। उसका नाम शैतान था। बहुत समय पहले शैतान सभी स्वर्गदूतों में सबसे सुन्दर था। इसी घमंड के कारण वह स्वर्गदूत से खुद ईश्वर बनना चाहता था और उसमें घमंड, नफरत और पाप भर गया। ईश्वर ने उसको स्वर्ग से निकाल कर बाहर कर दिया। उस के बाद से शैतान हर अवसर के इंतज़ार में रहता है कि ईश्वर को चोट पहुँचाये। वह ईश्वर के संसार को नष्ट करना चाहता था। इस कारण एक साँप का रूप धारण करके बगीचे में आ गया।

ईश्वर ने आदमी और औरत को सिर्फ एक नियम दिया और वह यह था कि ''उस पेड़ का फल मत खाना'' और कहा कि ''अगर तुम खाओगे तो मर जाओगे''। तो जैसे ही शैतान ने अवसर देखा वह बड़े भोलेपन के साथ धीरे से औरत के पास जाता है। ''क्या ईश्वर तुमसे प्रेम करता है?'' उसने उसके कान में यह बात डाली और कहा ''अगर प्यार करते हैं तो यह फल खाने क्यों नहीं देते, जो इतना अच्छा है कि तुम खा कर खुश हो जाओगी'' बेचारी, ''ईश्वर तो यह चाहते ही नहीं''। औरत सोचने लगी ''क्या ईश्वर मुझसे प्यार करते हैं?'' शैतान की बात जहर की तरह उस पर काम करने लगी।

शैतान ने आगे कहा ''मेरा विश्वास करो एक फल नहीं, बस एक टुकड़ा ही काफी होगा और इतने खुश हो जाओगे जितना कभी नहीं फिर तुम्हें ईश्वर की जरूरत ही नहीं होगी'' औरत ने फल तोड़ा और खाया और आदमी को भी खाने को दिया और वे एक भयंकर झूठ में फँस गये और तब से लेकर आज तक ये झूठ संसार में है। जो सभी के दिलों में जो चलता रहता है कि ईश्वर मुझसे प्रेम नहीं करता। यह एक सपना नहीं था एक हकीकत था आदमी-औरत के हाथ से सब कुछ छुट गया उन्हें खुद पर शर्म आने लगी। वहाँ का पूरा माहौल बदल गया।

हमेशा जिसकी आवाज सुनना उन्हें पसंद था। जिसकी आवाज सुनते ही दौड़ पड़ते। इस समय वे उससे दूर भाग रहे हैं। कहाँ हो तुम लोग?'' ईश्वर की आवाज आयी।

हम नहीं आ सकते आदमी ने कहा ''हम डरे हुए हैं। ईश्वर ने पूछा ''क्या तुमने वह फल खाया, मैंने मना किया था ना?'' आदमी ने कहा ''औरत ने मुझे खाने को दिया।'' यह तुमने क्या किया ईश्वर ने कहा। औरत ने कहा उस साँप ने मुझे बहकाया। ईश्वर का ह्रदय दुःख से भर गया। उसके बच्चे ने उसका दिया हुआ एक नियम नहीं निभा पाये। एक खूबसूरत रिश्ता तोड़ दिया और अब वह जानता था कि कुछ ठीक नहीं हो सकता और उनका बगीचे में रहना संभव नहीं है।

देखा कैसे सब कुछ उलटा-पुलटा हो गया। ईश्वर का सुन्दर संसार कैसे पाप में आ गया। अब ईश्वर के पास एक ही रास्ता था। ''तुम्हें बगीचा छोड़ कर जाना होगा।'' बड़े ही दुःख के साथ ईश्वर ने उनसे कहा और उनके आँसू रूक ही नहीं रहे थे।

अब यह तुम्हारा घर नहीं, तुम्हें जाना होगा। लेकिन जाने से पहले ईश्वर ने उनके लिए वस्त्र बनाये और उन्हें दिया और उन्हें एक लम्बी यात्रा पर भेज दिया और वे दूर रहने लगे। लेकिन ईश्वर ने उन्हें छोड़ा नहीं वह हमेशा प्रेम करता था।

आदमी और औरत ने गलती की और
ईश्वर के आज्ञा का पालन नहीं किया।

3 नदी में टोकरी, टोकरी में बालक मोशे

बात उन दिनों की है जब प्रभु के बहुत से लोग राजा की गुलामी में जी रहे थे। राजा ने उन पर सरदार नियुक्त किया जो उनसे महल और शहर बनवाने में मज़दूरों की तरह कार्य लेते थे। सुबह शाम उनसे कार्य करवाते। इन सबके बावजूद उनकी संख्या बढ़ती ही जा रही थी।

जिस देखकर राजा घबरा गया और देश में यह आज्ञा दे दी कि जिस भी मजदूर के यहाँ बेटा पैदा हो उसके बेटे को नील नदी में बहा दिया जाये।

उसी दौरान एक स्त्री को बच्चा पैदा हुआ। घर के सभी लोग ये देखकर घबरा गये कि बच्चा एक लड़का है। कुछ महीने तो उसने उसे संभालकर रखा, फिर उसे इस बात की चिन्ता हुई कि ये बात ज्यादा समय तक छिपायी नहीं जा सकती।

फिर उसे अपने बच्चे को बचाने का एक उपाय सूझा, उसने अपनी लड़की जो बच्चे की बड़ी बहन थी उससे कुछ सरकंडे लाने को कहा। उन सरकंडों की एक टोकरी बनाई और उसे अन्दर से मिट्टी से चिकना किया और बच्चे को उसमें रखकर नदी के किनारे छोड़ आई और अपनी बेटी को उस पर नजर रखने के लिए कहा।

बच्चे की माँ जानती थी कि राजा की बेटी प्रतिदिन यहाँ नहाने आती है। और वैसा ही हुआ - थोड़ी देर बाद राजा की बेटी जब वहाँ नहाने आयी तो उसकी नजर उस टोकरी पर पड़ी। उसने दासियों से टोकरी लाने को कहा। जैसे ही उसने टोकरी में देखा, एक सुन्दर बालक नज़र आया। बच्चे को देखते ही वह जान गयी कि ये उन मजदूरों में से किसी का है। पर बच्चे को देखते ही उसे उस पर तरस आया और उसने उसे पालने का निर्णय लिया। और उस बच्चे का नाम 'मोशे' रखा जिसका अर्थ होता है - पानी से निकाला हुआ।

तभी बच्चे की बहन उस राजकुमारी के सामने आयी और कहा कि क्या मैं किसी दाई को लेकर आऊँ जो इस बच्चे की देखभाल करे और उसे दूध पिलाये। जिस दाई को उसने बुलाया वो और कोई नहीं बल्कि बच्चे की माँ ही थी।

और इस प्रकार बच्चा राजमहल में रहने लगा। लेकिन ये बात उससे छिपी नहीं थी कि वो किसका बेटा है, और इस प्रकार बालक का पालन-पोषण राजमहल में होने लगा। अपने लोगों पर होते अत्याचार को देखकर उसे बहुत दुःख होता था।

इस प्रकार दिन बीतते गये, लोग ईश्वर की दुहाई देने लगे। भगवान का नाम लेकर बुलाने लगे कि उन्हें आकर छुड़ा ले। ईश्वर ने उनकी सुनी और उनको छुड़ाने के लिए योजना बनाई।

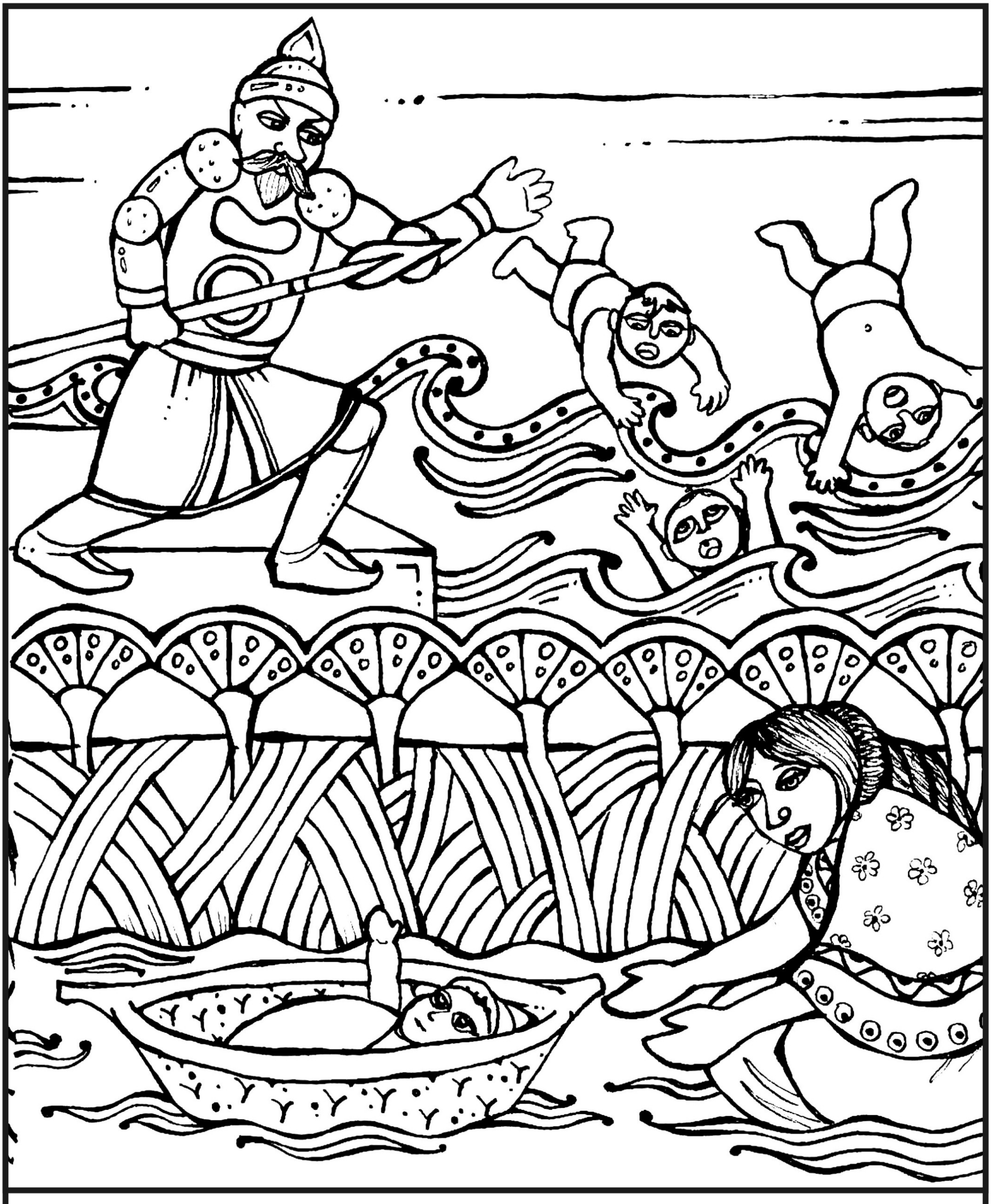

बालक मोशे मृत्यु से बच गया।

4 मोशे का लाल समुद्रीय रास्ता

एक दिन मोशे अपने जानवरों के साथ था कि उसे झाड़ियों में कुछ अजीब सा होते हुए दिखाई दिया। अरे इसमें से चिंगारी निकल रही है। लेकिन वे जल नहीं रही।

उसने पास जाकर देखा, तभी एक तेज आवाज आयी 'मोशे'। मोशे डर कर एक कदम पीछे हट गया। झाड़ियों से आवाज आ रही थी। ''मैंने अपने लोगों का रोना सुना'' ये ईश्वर की आवाज़ ''मैं उनके आँसू देखकर नीचे आया हूँ। उन्हें बचाने के लिए। जाओ और राजा से कहो कि मेरे लोगों को आजाद कर दे''।

मोशे बहुत डर गये लेकिन ईश्वर से कहा, ''मैं तुम्हारे साथ हूँ। तब मोशे ने जाकर कहा ''महाराज'' ईश्वरीय संदेश लाया हूँ। राजा ने उसकी बात अनसूनी कर दी फिर भी मोशे ने आगे कहा, ईश्वर का ये संदेश है कि उनके लोगों को छोड़ दिया जाये। राजा ने कहा, ''मैं क्यों छोड़ूँ उन्हें? मैं उन्हें नहीं जाने दूँगा।

इस तरह ईश्वर की चेतावनी उसे दस बार दी गई और हर बार राजा उन्हें छोड़ने से मुकर जाता।

परन्तु ईश्वर ने अपने लोगों को सारी विपत्तियों से बचा कर रखा और उन्हें सोना-चाँदी, कपड़े का इंतजाम किया कि वे वहाँ से निकल जायें। लेकिन जैसे राजा को उनके जाने की खबर लगी उसने उनके पीछे अपने सबसे तेज सैनिकों को लगा दिया। ताकि वो उनको वापस बन्दी बना लें, सेना घोड़ों, रथों पर सवार होकर उन्हें रोकने चल पड़ी।

मोशे उस पूरे जन-समूह के साथ जा रहा था और वे एक समुद्र के किनारे पहुँच गया। जैसे ही वह वहाँ से मुड़ना चाहा तो राजा के सैनिक उनके पीछे थे। अब उनके आगे समुद्र और उनके पीछे राजा के सैनिक थे। सभी लोग घबरा गये। तभी मोशे ने अपना हाथ उठाया, और ऐसी हवा चली जिसने समुद्र के पानी को दो भागों में बाँट दिया और सभी लोग ने समुद्र पार कर लिया।

पर जैसे ही राजा की सेना उनका पीछा करने के लिए समुद्र में आगे बढ़ी दोनों भाग पानी के आपस में मिलकर एक हो गये। और सारे सैनिक उसमें डूबने लगे। और इस तरह ईश्वर ने अपने लोगों को राजा की गुलामी से छुड़ा कर स्वतंत्र किया।

गुरु मोशे ईश्वर के लोगों को
लाल समुद्र के बीच में से ले जाता है।

5 योना का मछली घर

ईश्वर का संदेश योना के पास आया कि निनवे शहर जाये और अपने दुश्मनों से कहें कि ईश्वर उनसे प्यार करते हैं।

'नहीं' मैं नहीं जा सकता, वे बड़े ही खराब लोग हैं, योना ने कहा, ''हाँ'' इसलिए तो मैं चाहता हूँ कि तुम जाओ और उन्हें संदेश दो मैं उन्हें मौका देना चाहता हूँ मन फिराने के लिए ईश्वर ने जवाब दिया।

'नहीं प्रभु, उन्हें बदलना नामुमकिन है'।

योना ने मन में कहा और भाग जाने का फैसला किया। उसने सोचा कि मैं इतनी दूर चला जाऊँगा कि परमेश्वर को नजर ही नहीं आऊँगा और ना ही वह मुझे ढूँढ पायेंगे।

'हाँ' ये ठीक रहेगा। लेकिन ये एक बेकार योजना थी क्योंकि कोई ईश्वर से छिप नहीं सकता।

खैर योना ईश्वर से दूर जाने के लिए एक पानी के जहाज में जा बैठा, जो निनवे शहर को ना जाकर किसी और दिशा से जा रहा था योना को ये योजना अच्छी लगी और वह आराम से जहाज़ पर जा कर सो गया।

लेकिन अभी कुछ ही समय बीता था कि तेज हवायें चलने लगीं, तुफान उठने लगा और जहाज डगमगाने लगा। सभी लोग डर के मारे घबरा गये। कोई भी नाव को सम्भाल नही पा रहा था। जहाज़ बेकाबू होते जा रहा था। लोग चिल्लाने लगे कि ''हम डूब रहे हैं।'' सब अपने ईश्वर को याद करने लगे। धीरे-धीरे लोग अपना सामान भी फेंकने लगे कि जहाज़ हल्का हो जाये, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

जहाँ सब इतने परेशान थे वहीं योना जानता था कि ये सब उसकी वजह से हो रहा है। उसने जहाज़ के कप्तान से कहा कि उसे समुद्र में डाल दिया जाये, जहाज के लोग घबरा गये। योना ने कहा कि, ''इसके सिवा और कोई उपाय नहीं है।'' योना के बार-बार कहने पर लोगों ने उसे समुद्र में डाल दिया। छ...पा...क! और जैसे ही योना समुद्र के पानी में गिरा? तूफान एकदम से शान्त हो गया, तेज हवायें रूक गयीं।

योना को लगा ये उसके जीवन का अंत है। वह जानता था कि वह समुद्र के पानी में डूब जायेगा। लेकिन ईश्वर ने एक बड़ी मछली को भेजा, योना को बचाने के लिए।

गुरु योना ईश्वर से भाग जाता और
बड़ी मछली उसे निगल जाती है।

मछली ने योना को तुरन्त निगल लिया। योना को लगा होगा कि वह तो मर गया है। एकदम अंधेरा था। किसी गुफा की तरह... कुछ देर बाद उसे समझ में आया कि वह किसी मछली के पेट में है।

योना को बात समझ में आ गयी कि कोई ईश्वर से भाग नहीं सकता। उसने ईश्वर से क्षमा माँगी और उसकी आज्ञा पालन करने का निर्णय लिया। इस तरह वह मछली के पेट में पूरे तीन दिन तक रहा और तीसरे दिन मछली ने उसे समुद्र के किनारे सूखी भूमि पर उगल दिया। तब ईश्वर ने उससे फिर कहा कि वो निनवे शहर को जाये और इस बार उसने कहा, ''हाँ'' और वो सीधे निनवे शहर गया और सभी को ईश्वर की कही बात बताई। निनवे के लोगों ने उसकी बातों पर विश्वास किया और सभी लोगों ने बुराई से मुँह फेरकर अच्छाई और सच्चाई का रास्ता अपनाया।

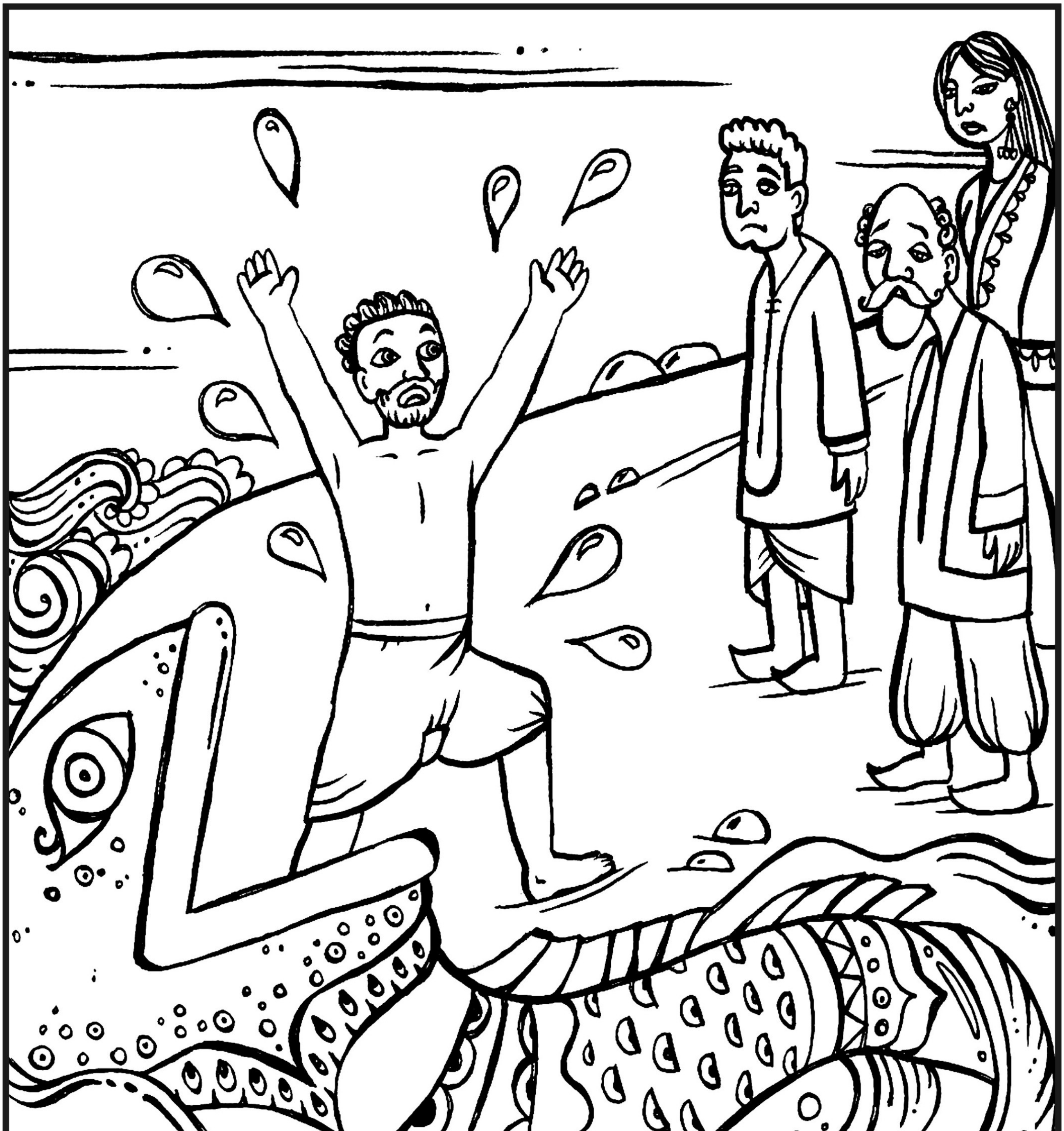

बड़ी मछली गुरु योना को सूखी भूमी पर ले जाती है
ईश्वर का सन्देश देने के लिए।

6 यह कोई आम बालक नहीं है

ईश्वर ने संसार से बहुत प्रेम किया और करते हैं। लेकिन संसार ने उनकी आज्ञा नहीं मानकर अपने आप को गलत काम में लगा दिया जिस से ईश्वर का दिल बहुत ही दुखी हो गया। वह नहीं चाहते हैं कि हमें सज़ा मिले और हम पाप में पड़े रहें। इसलिए उन्होंनें अपने बेटे मुक्तिदाता सनातन सद्गुरु यीशु को इस संसार में भेजा कि वह हमारे कारण दुःख उठाये और हमें क्षमा मिले।

जब प्रभु यीशु का जन्म होने वाला था तभी राजा की ओर से आज्ञा निकली कि सभी नागर वासियों को जनगणना के लिए अपने-अपने शहर को जाना होगा। यूसुफ, जो होने वाले बच्चे का पिता था, उसे भी अपने शहर बेतलेहेम जाना होगा। यूसुफ अपनी गर्भवती पत्नी मरियम को भी अपने साथ उस लंबी यात्रा पर ले गया। जब वे बेतलेहेम पहुँचे तो मरियम बहुत थक चुकी थी। और वहाँ उनके लिए रहने के लिए कोई जगह नहीं थी। सभी धर्मशालाएँ पहले से ही लोगों से भरी हुई थी। लेकिन एक धर्मशाला के मालिक को गर्भवती औरत पर बहुत तरस आयी लेकिन वह कुछ नहीं कर सकता था, सिर्फ एक गोशाला था जो जानवरों की बदबू और गदंगी से भरा हुआ था। लेकिन कम से कम आराम करने के लिए जगह तो मिली क्योंकि कहीं कोई जगह ही नहीं थी और उस रात उस गोशाले में बालक यीशु का जन्म हुआ और उन्हें कपड़े में लपेट कर चरनी में रखा गया।

उसके कुछ समय बाद बालक यीशु अपने माता-पिता के साथ मन्दिर में जाता है और वहाँ वह बड़े विद्वानों और ज्ञानियों के बीच बड़े धार्मिक बातें करते हैं जिस से सुन कर लोग आश्चर्य चकित हो जाते हैं। इस प्रकार पालन-पोषण एक साधारण बालक के भाँति होता है। कई वर्षों तक वह अपने माता-पिता के साथ रहकर उनकी सेवा कीये। लेकिन यह कोई आम बालक नहीं थे, यह ईश्वर के भेजे हुए मुक्तिदाता थे।

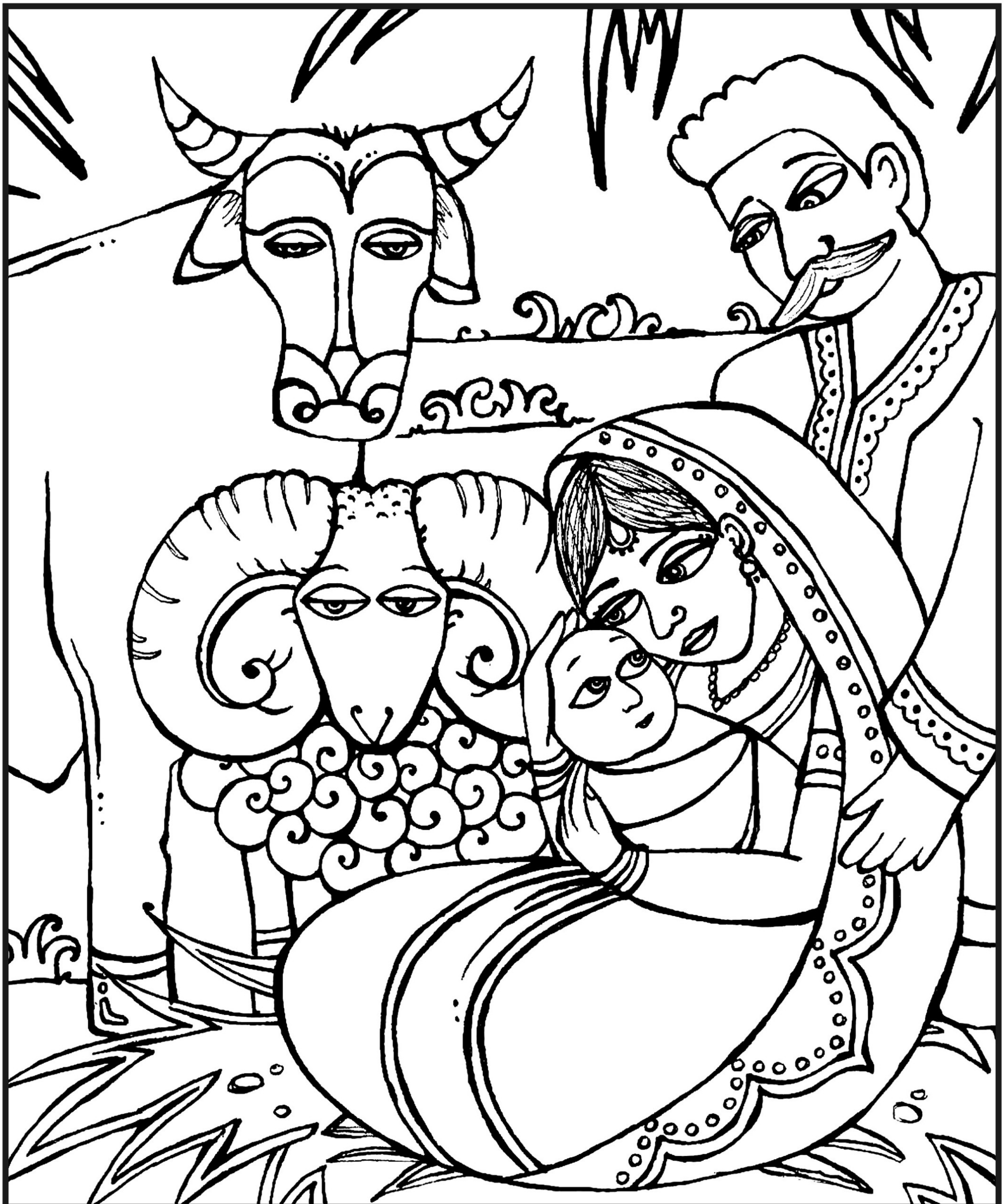

ईश्वर ने अपने बेटे को शिशु के रूप में
भेज दिया जिसका नाम यीशु था।

7 नदी के पार का पागल

एक बार गुरु यीशु और उनके शिष्य नदी पार करके एक शहर को पहुँचते हैं। जब गुरु नाव से उतरा वैसे ही एक आदमी जिसमें अशुद्ध आत्माएँ थी वह मिला। वह एकदम पागल जैसा दिखता था। कई बार लोगों ने उसे बेड़ियों से बाँध कर रखना चाहा लेकिन हर बार वह उसे तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर देता और बाहर निकल आता। कोई उसे वश में नहीं कर सकता था। वह सुनसान जगहों पर रहता, दिन रात पहाड़ों पर चिल्लाता रहता यहाँ तक कि अपने आप को पत्थरों से घायल करता रहता था।

गुरु यीशु को दूर से देखकर दौड़ा, गुरु को प्रणाम किया और ऊँचे शब्दों में कहने लगा ''हे गुरु परमप्रधान ईश्वर के पुत्र, आप को मुझसे क्या काम? आप मुझे कोई पीड़ा न दे।'' क्योंकि गुरु ने उस दुष्ट आत्मा को उस मनुष्य से निकल जाने को कहा। गुरु ने उसे दुष्ट आत्मा से छुड़ा दिया और दुष्ट आत्मा को दूर भगा दिया।

अब वह व्यक्ति एक दम शांत हो गया और यह कपड़े पहन कर सीधे बैठ गया। लोग इसे देखकर आश्चर्यचकित हो गए। जब गुरु यीशु वहाँ से चलने लगे तब वह (जिसमें दुष्ट आत्माएँ थी) गुरु के पास आया और कहने लगा कि वह भी गुरु के साथ रहना चाहता है। परन्तु गुरु यीशु ने उसे अपने साथ ले चलने से इंकार कर दिया और उससे कहा कि वह अपने घर जाए और लोगों को बताए कि गुरु ने उसके लिए कैसे बड़े कार्य किए। तब यह आदमी वापस चला जाता है और जिस किसी को वह बताता कि उसके साथ क्या हुआ सब लोग अचम्भा करते। और इस तरह एक दुष्ट आत्मा से भरे व्यक्ति को गुरु ने सभ्य और सामान्य बना दिया।

सद्‌गुरु यीशु एक व्यक्ति को बुरे आत्माओं की शक्ति से छुटकारा देते हैं।

8 मेरा पड़ोसी कौन?

एक दिन किसी ने गुरु यीशु से पूछा, ''मेरा पड़ोसी कौन है?'' और गुरु जी ने उन्हें यह कहानी सुनाई।

एक आदमी अपने गाँव की ओर यात्रा कर रहा था। सफर बहुत लम्बा था। वह एक सुनसान रास्ते से होते हुए जा रहा था। तभी अचानक कुछ डाकुओं ने उस पर हमला बोल दिया। डाकुओं ने उसके सारे पैसे ले लिए, सारा कीमती सामान ले लिया और उसे इतना मारा कि वह बेचारा एकदम अधमरा हो गया।

बड़ी देर तक वह वहाँ पड़ा रहा तभी कुछ समय बाद एक पुजारी जी उस रास्ते से जा रहे थे। उन्होंने उस घायल आदमी को देखा लेकिन उन्हें उस पर ज़रा भी दया नहीं आई और जल्दी से जल्दी वहाँ से चलते बने और उन्होंने उसकी कोई मदद नहीं की। कुछ ही देर बाद एक शिक्षक उस रास्ते पर आये और वह भी जल्दी-जल्दी वहाँ से निकल गये। उन्होंने घायल को देखा लेकिन बिना रूके वहाँ से चले गये।

उसके तुरंत बाद ही एक बड़ा ही साधारण व्यक्ति उस रास्ते पर चलता हुआ आ रहा था। वह उस कराहते हुए व्यक्ति को देखकर रुका। उसे घायल व्यक्ति पर बड़ी दया आई। उसने उसके घाव को साफ़ किया और उसे पास के सराय में ले गया। उसने उसके इलाज की अच्छी व्यवस्था की और पूरा समय उसका देखभाल किया। अगले दिन जाने से पहले सराय वाले से कहा ''इसकी अच्छे से देखभाल करे और जो कुछ भी खर्च आये मैं जब वापस आऊँगा तब पूरा करूँगा।

यह व्यक्ति उस घायल के लिए बिलकुल अनजान था। वह एक बहुत ही साधारण व्यक्ति था जिससे बहुत लोग घृणा करते थे।

यह कहानी सुनाने के बाद अब गुरु यीशु ने उस व्यक्ति की ओर देखा और पूछा ''अब तुम खुद ही बताओ कि उस घायल व्यक्ति के लिए उसका पड़ोसी कौन है।'' उसने उत्तर दिया ''जिसने उसकी मदद की।''

सद्‌गुरु यीशु ने हमें बताया कि
हम सभी को अपने समान प्रेम करें।

9 खाट उठाओ और चलो!

शहर के फाटक पर एक बहुत बड़ा कुण्ड था और वहाँ पर बहुत से बीमार, अंधे, लंगड़े और कई दूसरी बीमारी वाली लोग पड़े रहते थे कि इस कुण्ड में पानी के हिलते समय कुण्ड में जाये और अपनी बीमारी से स्वस्थ हो जाये। क्योंकि खास समय पर ईश्वर के दूत कुण्ड में उतर कर पानी को हिलाया करते थे और पानी हिलते ही जो कोई उसमें पहले उतरता वह स्वस्थ हो जाता था चाहे उसे कोई भी बीमारी क्यों न हो। वहाँ एक आदमी था जो अड़तीस साल से बीमारी की कारण वहाँ पड़ा हुआ था। उससे ना तो चला जाता था और नहीं वह वहाँ से उठ पाता था।

जब गुरु यीशु वहाँ आए उन्होंने इस आदमी को देखा और उससे पूछा ''क्या तुम स्वस्थ होना चाहते हो?'' उस बीमार व्यक्ति ने कहा ''हाँ, लेकिन मेरे साथ मेरी मदद को कोई नहीं है कि जब पानी हिले तो मुझे कुण्ड में ले के जाओ। हर बार मेरे पहुँचते-पहुँचते कोई और मुझ से पहले पानी में उतर जाता है।'' गुरु यीशु ने उससे कहा ''उठो अपनी खाट उठाओ और चलो फिरो।'' वह व्यक्ति तुरंत स्वस्थ हो गया और अपनी खाट उठाया और चलने लगा। लोग उससे पूछने लगे ''वह कौन है जिसने तुम्हें कहा कि 'खाट उठा और चल फिर'?'' परन्तु वह मनुष्य जो चंगा हो गया था वह नहीं जान पाया कि वह कौन है, क्योंकि उस जगह में भीड़ होने के कारण गुरु वहाँ से चले गये। उसके कुछ समय बाद गुरु यीशु उससे मन्दिर में मिले और गुरु ने उससे कहा ''देखो तुम ठीक हो गये। फिर से कोई पाप मत करना। कहीं ऐसा न हो कि भारी संकट में पड़ जाओ।'' उसके बाद वह व्यक्ति जाकर सभी से कहने लगा कि जिसने उसे स्वस्थ किया वह गुरु यीशु है।

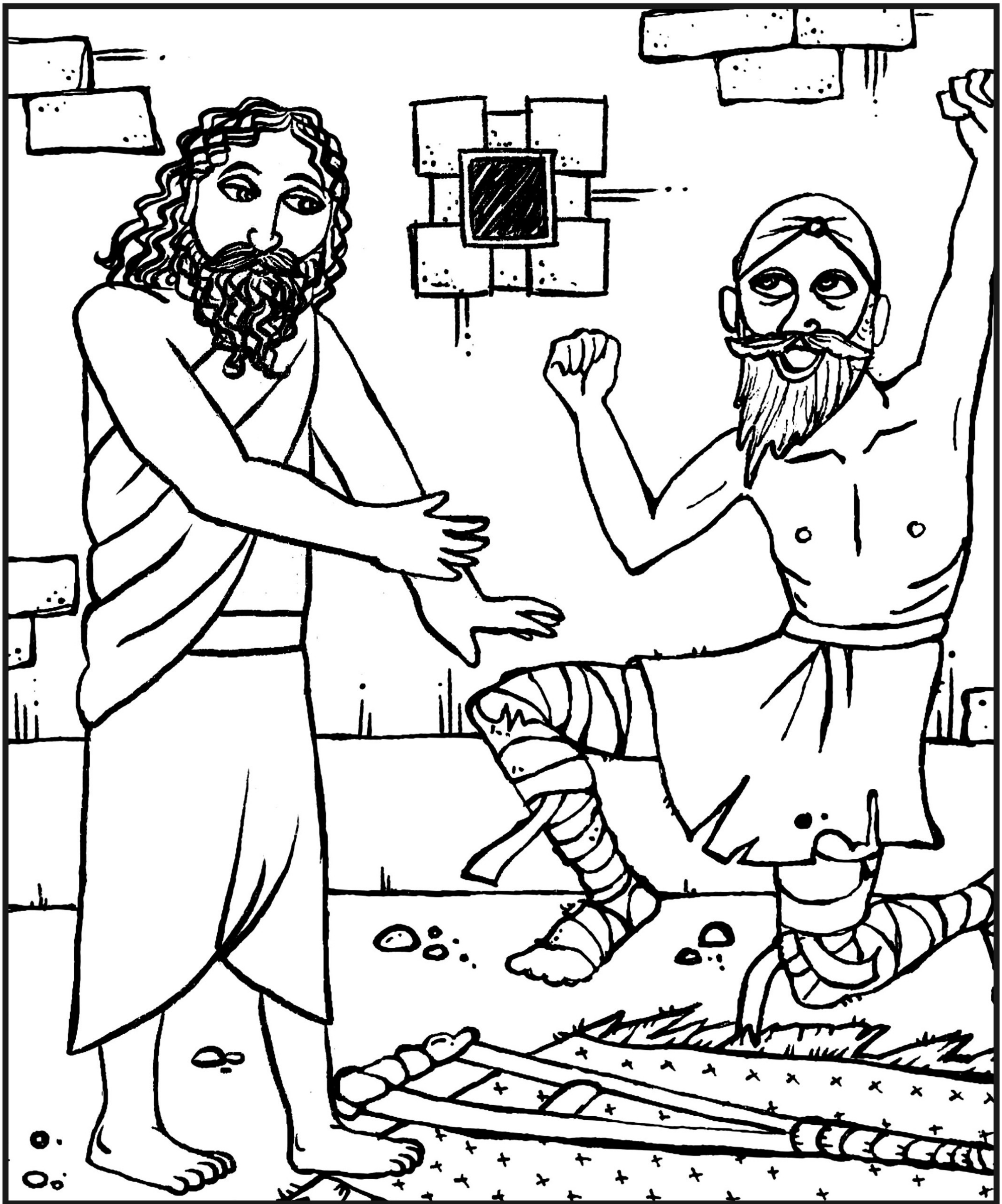

सद्‌गुरु यीशु एक व्यक्ति को स्वस्थ करते हैं
जो चल नहीं सकता था।

10 वह भयानक दिन

देर रात को गुरु यीशु ईश्वर के ध्यान में थे और उनके कुछ शिष्य थोड़ी ही दूर पे सो रहे थे। गुरु यीशु ने उनको जगाने की कोशिश की तभी कुछ भीड़ की आवाज और दूर से कुछ रोशनी आती दिखाई दी। मन्दिर के पुजारी और राजा के सैनिक गुरु यीशु के एक शिष्य के साथ आ रहे थे जिस को उन्होंने गुरु को पकड़वाने की योजना में अपने साथ मिला लिया। उन्होंने प्रभु यीशु को कैदी बना लिया और उन्हें घसीटते हुए राजा के दरबार में पेश किया गया और उनके ऊपर बहुत से दोष लगाये गये जिन में से एक भी सच नहीं था क्योंकि उस राज्य के विद्वान और बड़े लोग गुरु से ईर्ष्या रखते थे इसलिए वे उसे जान से मार डालना चाहते थे। इस कारण उन्हें बहुत से झूठे गवाह भी बुलाए और राजा पर गुरु यीशु की मौत की सज़ा देना का दबाव बनाने लगे। तब राजा ने गुरु यीशु से सवाल किया कि ''क्या तुम अपने बचाव में कुछ कहना चाहते हो?'' लेकिन गुरु यीशु ने किसी भी बात का कोई जवाब नहीं दिया और अन्त में उन्होंने निर्दोष गुरु को मृत्यु दण्ड सुना दिया। अब गुरु यीशु अपनी सज़ा के लिए ले जाये जाते हैं।

शहर के बाहर कुछ ऊँचाई पर राजा की सिपाही सद्‌गुरु यीशु के हाथ और पाँव को कीलों से लकड़ी पर बड़े ही निर्दयता से, न जाने कितनी बार, हथौड़ी से ठोक देते हैं और उस लकड़ी को कड़ी धूप में खड़ा कर दिया। जहाँ गुरु यीशु बड़े ही पीड़ा से होकर गुज़रते हैं वही उनके माँ-बाप का भी बहुत बुरा हाल था। उन्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि वे क्या करें। परन्तु इन सब के बावजूद गुरु यीशु ने सब को, यहाँ तक कि उन्हें सज़ा देने वालों को भी क्षमा किया और अपने प्राण को त्याग दिया। उसी वक्त सारे आसमान में अंधेरा हो गया और पृथ्वी हिल गयी और सभी लोग घबरा गये। तब उसके बाद प्रभु यीशु के कुछ चाहने वाले उसके लिए एक समाधि बनाई।

लेकिन यह सनातन सद्‌गुरु यीशु की कहानी का अन्त नहीं है, ईश्वर की एक बहुत बड़ी योजना थी मेरे लिए और आप के लिए भी।

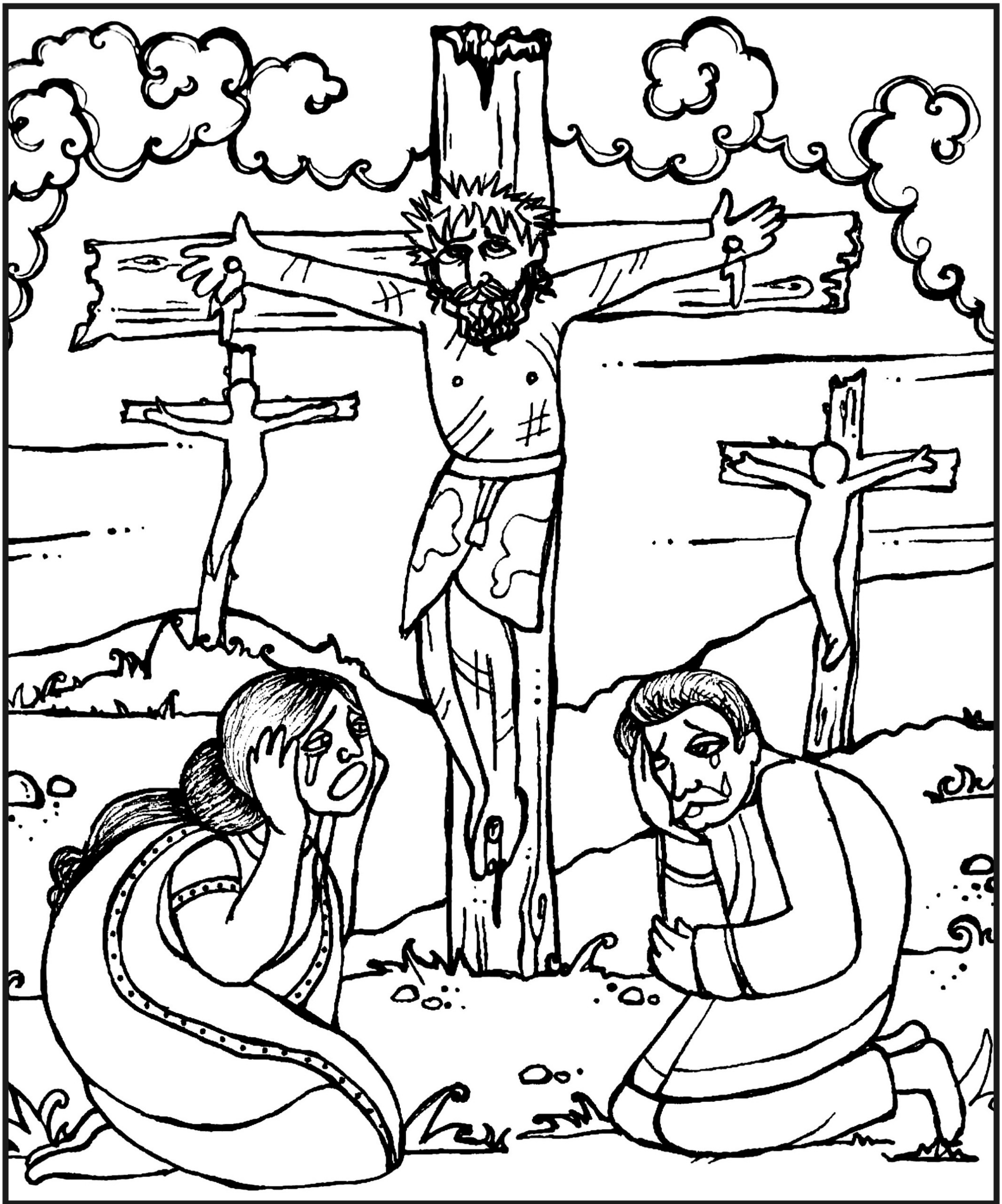

सद्गुरु यीशु हमारे पापों को
दूर करने के लिए क्रूस पर मर गए।

11 यहाँ कोई भूत नहीं

सद्गुरु यीशु के मरने के दो दिन बाद, तीसरे दिन सुबह-सुबह, बड़ी भोर में ही एक महिला, गुरु यीशु के समाधि पर आई। लेकिन - यह क्या? समाधि का द्वार तो खुला है और गुरु की समाधि भी नहीं दिखती। यह सब देखके वह बहुत ही डर जाती है क्योंकि गुरु पर लपेटा हुआ वस्त्र वहीं पड़ा था। यह देखकर वह रोने लगती है। तभी उस जगह उसने एक आदमी को देखा जिसे उसने माली समझा और वह उससे गिड़गिड़ाकर यह कहती है ''क्या आप ने हमारे गुरु को यहाँ से हटा दिया है? अगर हाँ तो मेहरबानी करके बतायें कि वह कहाँ है।'' तब उस पुरुष ने जवाब दिया कि ''सुनो...'' इतने सुनते ही वह पीछे मुड़के कही ''हे मेरे गुरु!'' और उनके साथ कुछ समय बिताया और उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था।

सद्‌गुरु यीशु मृत्युंजय और जीवित हैं!

उनसे मिलने के बाद वह गुरु के शिष्यों के पास जाकर, जो कुछ भी हुआ था, विस्तार से बताया। गुरु के सारे शिष्य एक कमरे में, एक साथ, एक ही जगह पर इकट्ठे थे। सारे खिड़की दरवाजे बंद करके रखे थे क्योंकि उन दिनों वे बहुत ही डरे हुए थे। तभी अचानक वहाँ पर गुरु यीशु प्रगट हो जाते हैं और उनके बीच में दिखाई देने लगते हैं। गुरु ने उनसे कहा कि ''तुम्हें शान्ति मिले।'' लेकिन सारे शिष्यों का तो बुरा हाल था। उन्हें लगा कि कोई भूत आ गया है। परन्तु गुरु ने उन्हें शांत किया और उन्हें अपनी हथेलियों को दिखाया जिसमें कीलें ठोकी गयी थीं। और जब वे जान गये कि यह गुरु यीशु ही हैं और कोई भूत नहीं तो वे बड़े ही आनन्द से भर गये। उन्हें उससे दुबारा बातें करना और देखना बड़ा ही अच्छा लगा। गुरु ने उससे कहा ''यह सब कुछ परमात्मा की योजना थी।'' और उन्हें पावन आत्मा से भर दिया और गुरु ने उनसे अन्य बहुत सारी बातें बतायीं। और इस तरह यीशु मृत्यु को हरा कर यानी कि हमारे पापों को हराकर एक नया जीवन दिया और अद्‌भुत रूप से जीवित हुए।

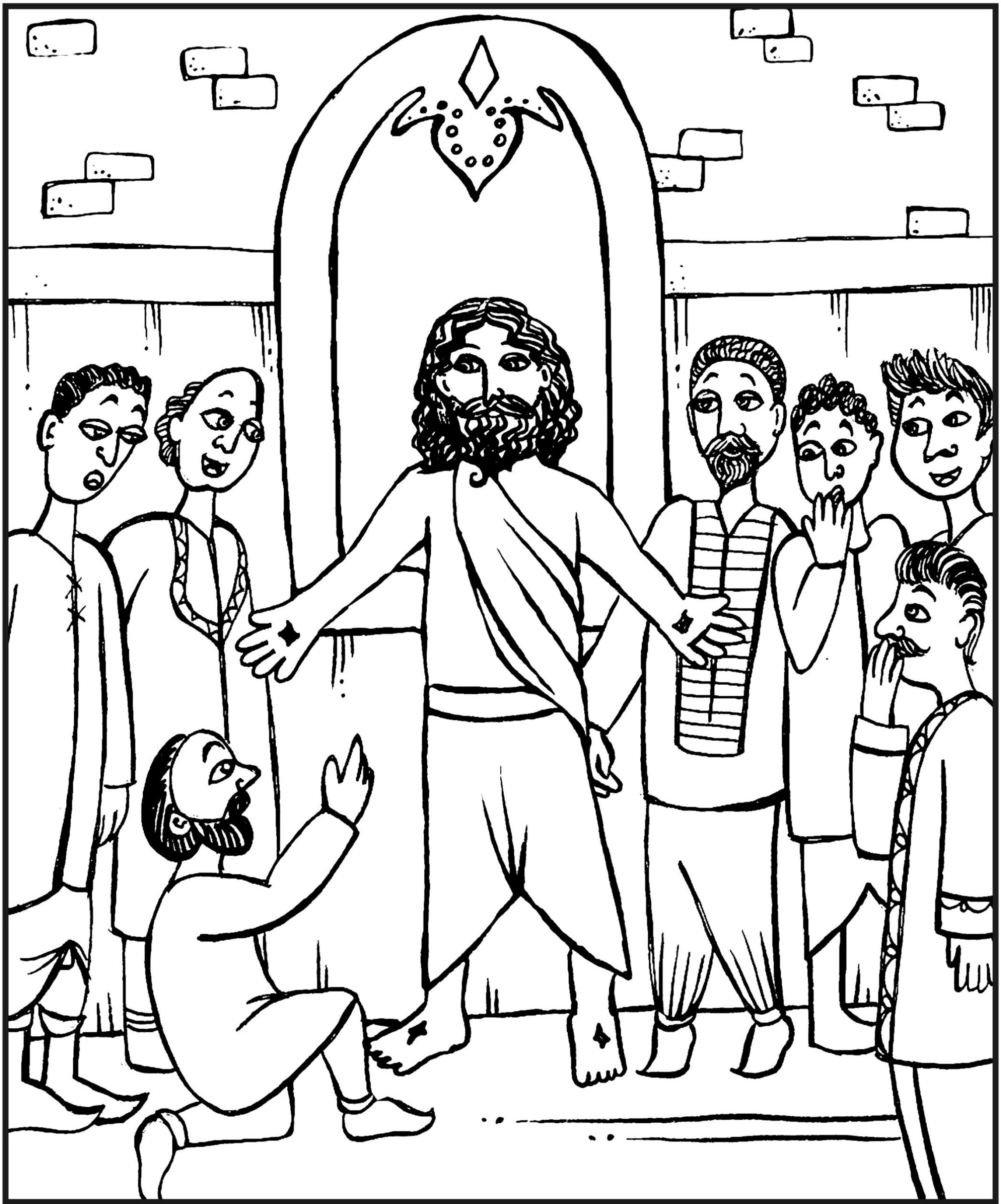

सद्‌गुरु यीशु अपने आप को
अपने शिष्यों को दिखाते हैं।

12 बादलों के पार एक संसार

सद्‌गुरु यीशु ने कुछ दिन अपने चेलों के साथ बिताये और जब वे उनके साथ चल रहे थे तो उन्होंने अपने चेलों से कहा कि ''देखो, अब मुझे अपने पिता के घर जाना होगा।'' उनके चेले आश्चर्यचकित हो जाते हैं। लेकिन तभी उन्हें वह बात याद आती है जो गुरु यीशु मृत्युदण्ड से पहले उनसे कहा था कि ''मेरे पिता के घर में तुम्हारे लिए बहुत जगह है और मैं तुम्हारे लिए एक पूरा संसार तैयार करने जा रहा हूँ'' जिसे हम कहते हैं स्वर्ग।

और गुरु यीशु ने कहा ''मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ।'' और इन्हीं सब बातों के दरमियान गुरु यीशु स्वर्ग की ओर उठा लिये जाते हैं और उनके शिष्य अचंभित होकर आकाश में तब तक निहारते हैं जब तक कि प्रभु यीशु बादलों में बहुत ऊपर नहीं हो जाते हैं। उसके बाद भी वे ऊपर देखते रहते हैं, ताकते ही रहते हैं और उसी समय आकाश में दो स्वर्गदूत नीचे आते हुए दिखाई देते हैं। और इन्होंने यह आकाशवाणी की ''गुरु यीशु तो अभी स्वर्ग में हैं, लेकिन एक दिन वह जरूर वापस आयेंगे और ठीक वैसे ही जैसे वे ऊपर गए।'' प्रभु के शिष्य बड़े आनन्द के साथ लौट आये और उसके बाद से वे लगातार मन्दिर में इकट्ठा होकर प्रभु का गुणगान किया करते थे।

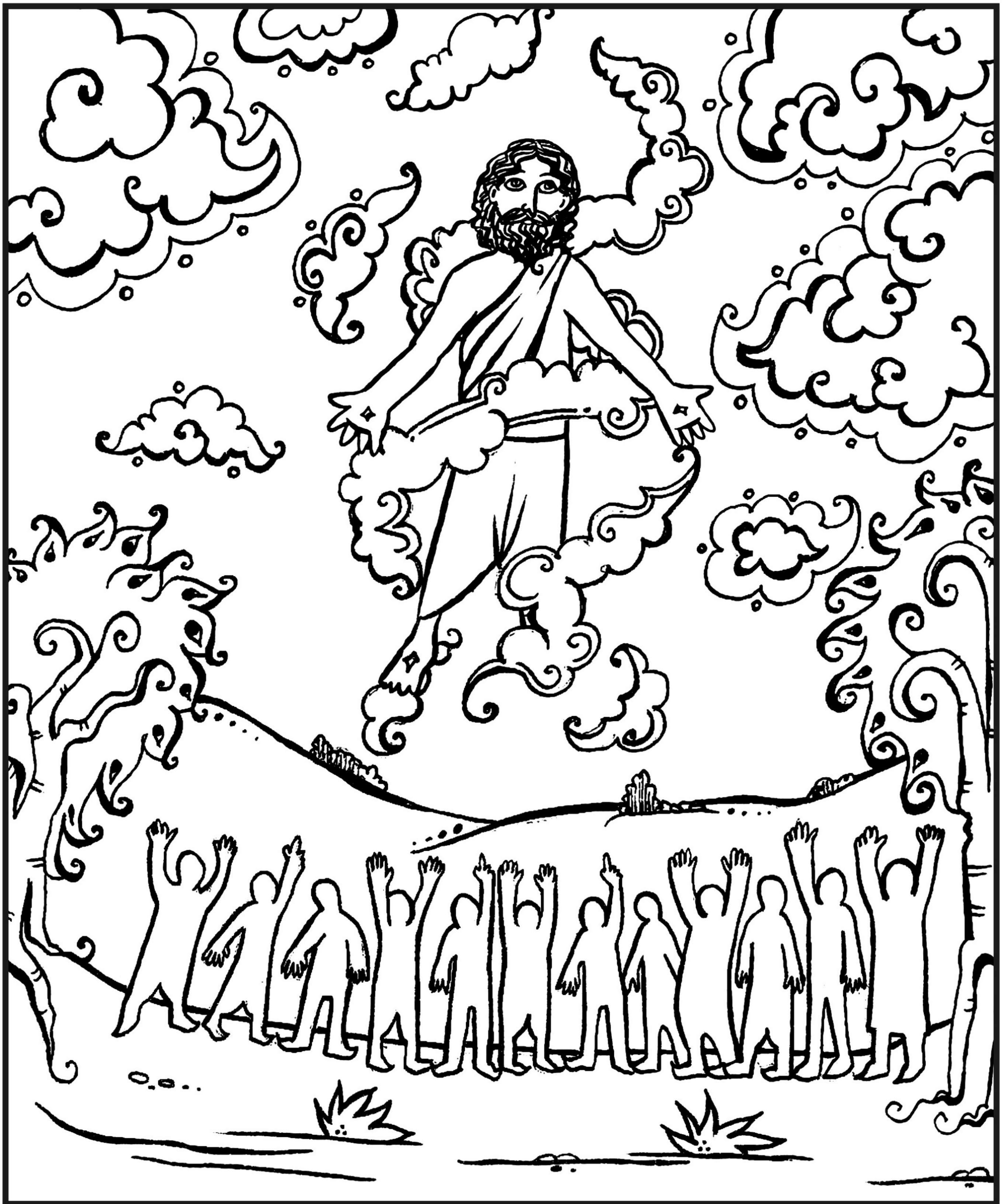

सद्‌गुरु यीशु स्वर्ग में लौट जाते हैं
हमारे लिए एक स्थान तैयार करने के लिए

13 आँधी, आग और भाषाएँ

जैसे कि प्रभु के शिष्य हर दिन इकट्ठा होते थे, ठीक वैसे ही एक दिन सद्‌गुरु यीशु के शिष्य एक जगह पर इकट्ठे थे। अचानक एकाएक आकाश से बड़ी आँधी की सनसनाहट सी आवाज आने लगी और वह पूरा कमरा, जहाँ वे बैठे थे, गूँजने लगा और उनके सर पर आग की लपटें दिखाई देने लगी जो जल तो रही थी लेकिन किसी को भी कोई नुकसान नहीं पहुँचायी।

वे सब ऐसी-ऐसी भाषा बोलने लगे जिसको उन्होंने कभी नहीं सीखा था। यह भाषाएँ पावन आत्मा के द्वारा दी गयी थी। अन्य भाषाएँ, जैसे कि हम सबकी अपनी भाषायें हैं - शायद हिन्दी, मराठी, तमिल, बंगाली तथा कोई अन्य।

वहाँ एक मन्दिर होने के कारण अलग-अलग भाषा के लोग आते रहते थे और जब वह हुआ तो वह एक भीड़ लग गई। लोग शिष्यों को देखकर घबरा गए क्योंकि हर एक को लगता कि ''यह मेरे ही भाषा में बोल रहे हैं!'' वे सब लोग बड़े ही चकित और अचंभित हो गये कि ''कैसे ये हमारी भाषा में प्रभु की उपासना कर रहे हैं? शायद यह सब पागल हो गये हैं!'' तभी अचानक उनमें से एक शिष्य ने कहा ''मेरी बात ध्यान से सुनो! हम पागल नहीं हैं। हम तो तुम्हें ईश्वरीय संदेश देते हैं।'' शिष्य ने आगे कहा ''अपनी गलती मानो कि ईश्वर तुम्हें क्षमा करें और एक नये जीवन की शुरुआत करो!'' और उन्होंने सद्‌गुरु यीशु के विषय में वह सब कुछ बताया जिसको आपने पहले वाले पन्नों में सुना।

और उस दिन एक बड़ी संख्या में लोगों ने जीवन परिवर्तित होते हुए देखा। जितने लोगों ने गुरु यीशु पर विश्वास किया जीवन पाया और यीशु भक्त कहलाये।

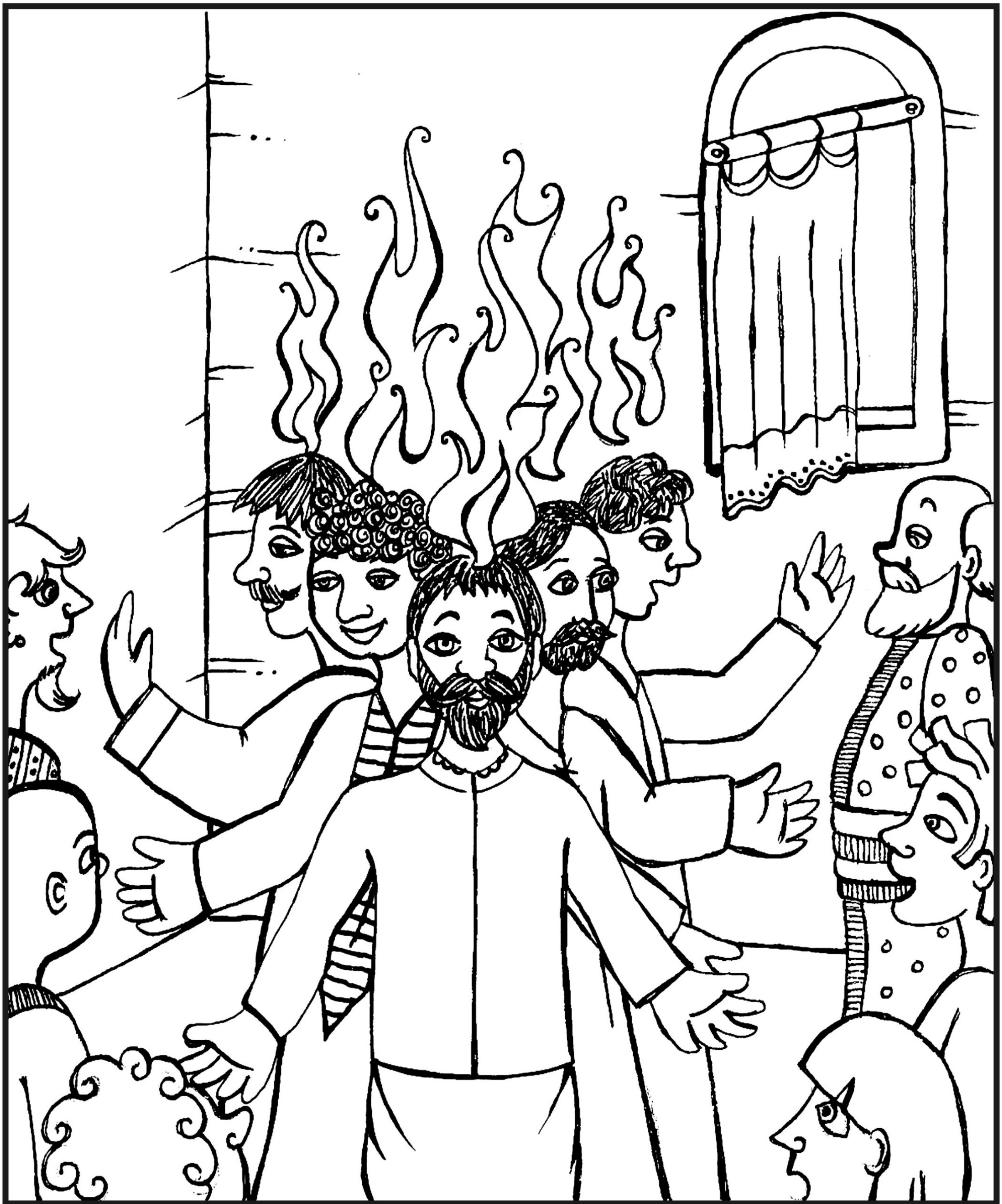

ईश्वर का पावन आत्मा उन लोगों में बसता है
जो उन पर विश्वास करते हैं।

14 समापन

''परमात्मा ने संसार के सब लोगों से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना अनोखा सुपुत्र दे दिया कि जो कोई उनके पुत्र पर पूर्ण विश्वास करेगा उसका विनाश नहीं होगा, परन्तु अमृत जीवन पायेगा, परमात्मा ने अपने पुत्र को संसार में इसलिए नहीं भेजा कि वह संसार के लोगों को दण्ड का आदेश दें, वरन् इसलिए भेजा कि वह उनको मोक्ष प्रदान करें।''

- संत योहन

''सच्ची ज्योति, जो सम्पूर्ण मानव जाति को प्रकाशित करती है, संसार में आ रही थी। वह 'ज्योति-शब्द' अपने बनाए हुए संसार में आया, किन्तु संसार के लोगों ने उसको नहीं पहचाना। वह अपनी सृष्टि में आया, परन्तु उसके अपनों ने ही उसका तिरस्कार किया। लेकिन जिन्होंने उसे अपनाया और उसके नाम पर पूर्ण विश्वास किया उसने उन्हें परमात्मा की संतान बनने का अधिकार दिया।''

- संत योहन

''बच्चों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करो -
क्योंकि परमात्मा का राज्य ऐसों का ही है।''

- सद्‌गुरु यीशु

सद्‌गुरु यीशु के संबंध में और जानकारी पाने के लिए हमारी वेबसाइट को देखें -

www.ashramoflight.com

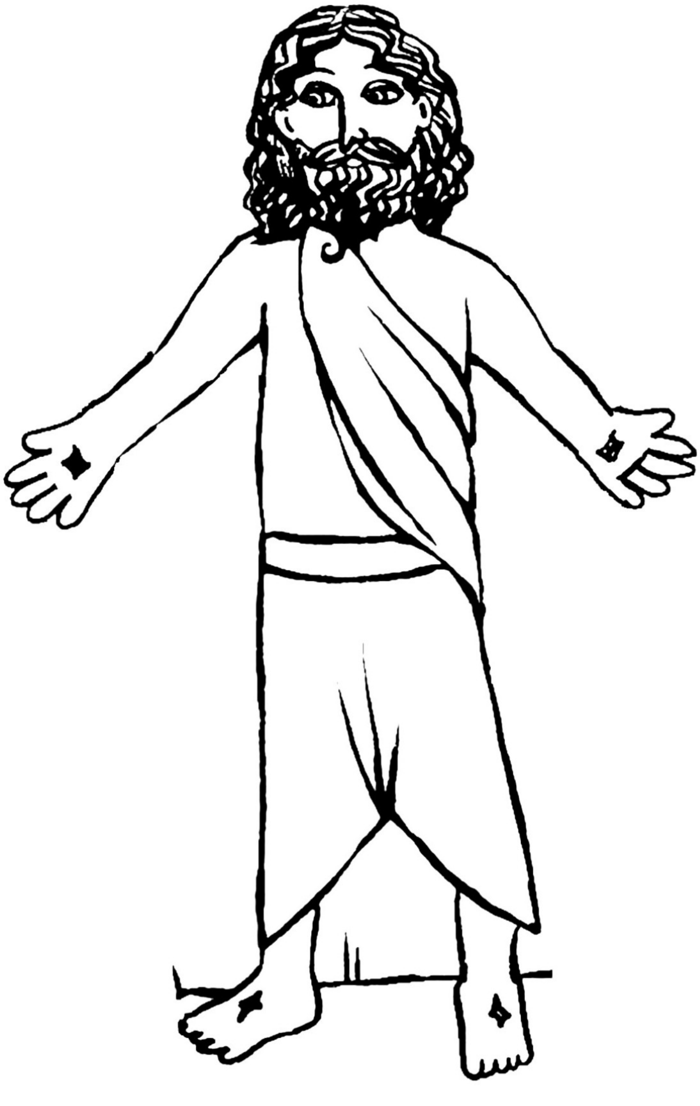

सद्गुरु यीशु आपसे प्रेम करते हैं और आप को
मोक्ष देना चाहते हैं। आपको सिर्फ उन पर विश्वास करना है।

www.ashramoflight.com